अंक : १२९
जनवरी-मार्च २०१५

# कथाबिंब

कथाप्रधान त्रैमासिक पत्रिका

## कहानियां

संतोष परिहार • पीयूष द्विवेदी • मदन मोहन प्रसाद
विक्रम सिंह • रविशंकर सिंह

आमने-सामने • सागर-सीपी
सुरभि बेहेरा • डॉ. श्याम निर्मोही

१५ रुपये

जनवरी-मार्च २०१५
(१९७९ से प्रकाशित)

# कथाबिंब

## कहानियां

अंतिम पड़ाव पर - **संतोष परिहार** ७
पाखंडी - **पीयूष द्विवेदी** ११
लीक - **मदन मोहन प्रसाद** १५
पॉवर, पैसा और परिवार - **विक्रम सिंह** १९
जीवन खेल तमाशा- **रविशंकर सिंह** २५

## लघुकथाएं

ढोल / **प्रबोध कुमार गोविल** ९
हमारा अच्छा बेटा ! / **श्याम कुमार राई** २३
**बारिश का बोझ** / **सुनील गज्जाणी** ३५

## ग़ज़लें / कविताएं

ग़ज़ल / **रामकुमार पटेल "यार"** १०
ओ खेवनहार (कविता) / **दयाशंकर "सुबोध** १८
शब्द (कविता) / **डॉ. प्रभा मुजुमदार** ३०
गज़ल / **अशोक "अंजुम"** ४१
नारी नदी है ! (कविता) / **प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय** ४५

## स्तंभ

"कुछ कही, कुछ अनकही" २
लेटर बॉक्स ४
"आमने-सामने" / **सुरभि बेहेरा** ३१
"सागर-सीपी" / **डॉ. श्याम निर्मोही** ३६
**"बाइस्कोप" (सविता बजाज)** /इब्राहिम अल्काज़ी ३९
**"मत-मतांतर"** / कुशेश्वर ४२
पुस्तक-समीक्षा ४६

**प्रधान संपादक**
डॉ. माधव सक्सेना "अरविंद"
**संपादिका**
मंजुश्री
**संपादन सहयोग**
जय प्रकाश त्रिपाठी
अश्विनी कुमार मिश्र
अशोक वशिष्ठ
हम्माद अहमद ख़ान

संपादन-संचालन पूर्णतः
अवैतनिक तथा अव्यवसायिक

●सदस्यता शुल्क●
**आजीवन** : ५०० रु., **त्रैवार्षिक** : १२५ रु.,
**वार्षिक** : ५० रु.,
(वार्षिक शुल्क ५ रु. के डाक टिकटों के रूप में भी स्वीकार्य है)
कृपया सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा केवल **"कथाबिंब"** के नाम ही भेजें.

●रचनाएं व शुल्क भेजने का पता●
ए-१० बसेरा, ऑफ दिन-क्वारी रोड,
देवनार, मुंबई-४०० ०८८.
फोन : २५५१ ५५४१, ९८१९१६२६४८

e-mail : kathabimb@yahoo.com
**www.kathabimb.com**

● **न्यूयॉर्क संपर्क** ●
**Naresh Mittal**
(M) 845-304-2414
**Namit Saksena**
(M) 347-514-4222
● **शिकागो संपर्क** ●
**Tulika Saksena**
(M) 224-875-0738

***एक प्रति का मूल्य : १५ रु.***
कृपया नमूने की प्रति मंगाने हेतु १५ रु. के डाक टिकट अवश्य भेजें.
**(सामान्य अंक : ४०-४४ पृष्ठ)**

●**"कथाबिंब" अब फेसबुक पर भी** ●
**facebook.com/kathabimb**
*आवरण पर नामित रचनाकारों से निवेदन है कि वे कृपया अपने नाम को "टैग" करें.*

आवरण चित्र : नमित सक्सेना
बांद्रा-वर्ली "सी लिंक" (मुंबई).

"कथाबिंब" मुंबई की "संस्कृति संरक्षण संस्था" के सौजन्य से प्रकाशित होती है.

# कुछ कही, कुछ अनकही

समय-समय पर, कई बार, हमने यह उल्लेख किया है कि *"कथाबिंब"* अकादमिक पत्रिका नहीं है. इसीलिए किसी भी साहित्यिक विधा संबंधी आलेख आदि पत्रिका में प्रकाशित नहीं किये जाते. ऐसी सामग्री को तरजीह देने वाली तमाम अन्य पत्रिकाएं हैं. यही कारण है कि लोकार्पण, विमोचन और सम्मान-समारोह आदि के समाचार भी *"कथाबिंब"* में नहीं दिये जाते. सामान्य पाठक भी ऐसी सामग्री से परहेज़ करता है. बिना पढ़े वह पन्ने पलटता जाता है. *"कथाबिंब"* कथा-प्रधान पत्रिका है, हम चाहते हैं कि प्रत्येक अंक में अधिक से अधिक पृष्ठ कहानी को मिलें. इस अंक में *"मत-मतांतर"* के अंतर्गत अपने एक पुराने मित्र और हितैषी का पत्र प्रकाशित किया गया है. पिछले लगभग तीन दशकों से इनको *"कथाबिंब"* जाती रही है. देर से ही सही, इतने सालों के बाद मित्र ने सुध ली. मित्र का आग्रह मानकर बिना कुछ कांट-छांट कर पूरी प्रतिक्रिया छापी गयी है. मैं केवल इतना ही कहना चाहूंगा कि हर रचनाकार का भोगा हुआ यथार्थ एक-सा नहीं हो सकता. यह भी काल और स्थान सापेक्ष होगा. दूसरों के अनुभवों को या भोगे हुए यथार्थ को आप सिरे से नकार नहीं सकते क्योंकि कभी आपका अनुभव भिन्न था !

इस बार *"कमलेश्वर-स्मृति कथाबिंब कथा पुरस्कार-२०१४"* के पुरस्कारों की घोषणा अंक के अंतिम पृष्ठ ५२ पर प्रकाशित की गयी है. *"कहानी-विशेषांक"* में छपी कहानियों के संबंध में निर्णायकों का सर्वसम्मिति से मत था कि इनका क्रम निर्धारित करना बड़ा ही मुश्किल कार्य साबित हुआ क्योंकि कोई भी कहानी किसी भी तरह कमतर नहीं थी. अंततः यह तय पाया गया कि दो के स्थान पर चार कहानियों को सर्वश्रेष्ठ की कोटि में रखा जाये. पुरस्कृत कहानियों में से कुछ के रचनाकार प्रवासी हैं. ऐसे रचनाकारों से अनुरोध है कि कृपया अपना कोई भारतीय संपर्क हमें सूचित करें जहां उनके पुरस्कार की राशि भेजी जा सके. वेबसाइट के अलावा *"कथाबिंब"* को फ़ेसबुक पर भी देखा जा सकता है. आवरण पर नामित लेखकों से निवेदन है कि वे कृपया अपने नाम को *"टैग"* करें. इससे इनकी रचनाओं की *"पहुंच"* का दायरा और व्यापक होगा.

●

अब इस अंक की कहानियों पर -- अंक के लगभग सभी रचनाकार *"कथाबिंब"* के पाठकों के लिए नये हैं. संतोष परिहार की कहानी *"अंतिम पड़ाव पर"* कई अभिव्यंजनाओं को समेटे हुए है. श्मशान के पास रहने वाले मुफलिस लोगों के लिए दाह-संस्कार के लिए किसी मुर्दे का आना कुछ "प्राप्ति" से अधिक महत्व का नहीं होता. छोटी छबीली ख़ुश होती है कि उसका नंबर पहला लग गया. पर भाग्य उसका साथ नहीं देता. शव-यात्रा के साथ आये लोग सारा चढ़ावा चिता के साथ ही जला देते हैं और वह हाथ मलती रह जाती है! अगली कहानी *"पाखंडी"* (पीयूष द्विवेदी) वर्तमान राजनीति के दोहरे चेहरे को उजागर करती है. एक तरफ़ तो हम आइडियोलॉज़ी और आधुनिकता की बातें करते हैं और विरोध प्रदर्शन के लिए खुलेआम किसी भी सीमा तक जा सकते हैं. दूसरी ओर व्यक्तिगत संबंधों को लेकर प्यूरिटन बन जाते हैं. यही दो लोगों के मध्य टकराव का कारण बनता है. मदन मोहन प्रसाद की कहानी *"लीक"* में पिता-पुत्र के बीच महज दो पीढ़ियों का अंतर ही नहीं दर्शाया गया है. आधुनिकता के प्रभाव के कारण पुत्र को पिता की कोई भी बात अच्छी नहीं लगती, जब तक स्वयं उसे ठोकर नहीं लगती. इधर कई पत्रिकाओं में विक्रम सिंह की कहानियां आयी हैं. उनकी कहानी *"पॉवर, पैसा और परिवार"* आज के आम भारतीय युवा की कहानी है. पैसे और पॉवर के पीछे भागते-भागते रवि घर-परिवार से बहुत दूर, विदेश चला जाता है. उसके संबंध वहीं की एक युवती से हो जाते हैं. ग्लानि महसूस होने पर विदेश से वह भारत लौट आता है. पर क्या सब कुछ पहले जैसा हो पायेगा? अंक की अंतिम कहानी *"जीवन खेल तमाशा"* (रविशंकर सिंह) एक संघर्षरत मध्यम वर्गीय परिवार की कहानी है. अपने बेटे के अच्छे भविष्य के लिए पिता और मां ने अपना जीवन होम कर दिया और शहर चले आये. वृद्धावस्था में मां विक्षिप्त हो जाती है. गांव से विस्थापन का दर्द उसे हर पल कचोटता रहता है.

●

पिछला एक वर्ष राजनीतिक गतिविधियों का बेमिसाल साल रहा है. विशेष बात यह रही कि चाहे लोक सभा के चुनाव हों या फिर विधान सभा के कहीं से भी किसी धांधली या रिगिंग की ख़बर नहीं सुनाई दी. जब कि पहले बूथ कैप्चरिंग या बायकॉट की बातें अक्सर सुनने में आती थीं. जम्मू-कश्मीर में ५५ से ६० प्रतिशत वोट पड़े. यह संकेत है कि बरसों के आतंकवाद और उग्रवाद से जम्मू-कश्मीर की जनता आजिज आ गयी है और अब अमन-चैन चाहती है. निष्पक्ष चुनाव कराने का सारा श्रेय चुनाव आयोग को जाता है. यह बात अलग है कि कश्मीर घाटी ने पूरी तरह भाजपा को नकार दिया और जम्मू में इसका उल्टा हुआ. अंततः पी. डी. पी. और भाजपा ने एक साझे कार्यक्रम के आधार पर सरकार गठित

की. हमें आशा करनी चाहिए कि यह सरकार छह साल का अपना कार्यकाल पूरा करेगी और पुनः कश्मीर अपने गौरव को प्राप्त करेगा. जम्मू-कश्मीर के बाद सारे देश की नज़रें दिल्ली के चुनाव पर लगी थीं. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी सरकार की पूरी ताकत दिल्ली चुनाव में झोंक दी. श्रीमती किरण बेदी को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया. मीडिया ने इसे मास्टर स्ट्रोक कहा. टी वी चैनलों पर सभी प्री-पोल व एक्ज़िट-पोल निरंतर बता रहे थे कि भाजपा और "आप" में कांटे की टक्कर है और कॉन्ग्रेस ने पूरी तरह हथियार डाल दिये हैं. किंतु जो परिणाम सामने आये वैसी कल्पना किसी ने नहीं की थी. "आप" को ५४ प्र. श. वोटों के साथ ६७ सीटें मिलीं, ३२ प्र. श. वोट भाजपा को मात्र ४ सीट ही दिला पाये और कॉन्ग्रेस के ६३ प्रत्याशियों की ज़मानत जप्त हुई. दिल्ली के २०१३ के चुनावों में "आप" को २९ प्र. श. वोट शेयर के साथ २८ सीटें आयी थीं और ३३ प्र. श. शेयर के साथ भाजपा को ३२ सीटें मिलीं. इस बार अल्पसंख्यक वोटों का पूरी तरह ध्रुवीकरण हुआ और बिल्लियों की लड़ाई में बंदर रोटी ले भागा. जिस तरह जनता ने केंद्र में पांच साल के लिए मोदी सरकार को अप्रत्याशित जीत दिलाकर काबिज किया है उसी तरह जनता ने "आप" को दिल्ली में सत्ता में रहने का अभूतपूर्व जनादेश दिया है. लेकिन अभी दो महीने नहीं हुए अरविंद केजरीवाल का तानाशाही हिटलरी रूप सामने आया है. नज़दीकी कहे जाने वाले अपने लोगों का भी विरोध उन्हें क़तई पसंद नहीं. यदि "आप" में रहना होगा तो "केजरीवाल-केजरीवाल" कहना होगा. अन्यथा पार्टी से आपकी छुट्टी. यहां तक कि जन-लोकपाल के आंदोलन से बनी "आप" में अपने ही लोकपाल रामदास के लिए भी जगह नहीं !

कुछ ही समय में मोदी सरकार का एक साल पूरा हो जायेगा. इस बीच न जाने कितनी ही लोक लुभावनी योजनाएं शुरू की गयी हैं. मनमोहन सिंह जी जितना कम दिखते थे और कम बोलते थे उनकी अपेक्षा वर्तमान प्रधानमंत्री रोज़ देश या विदेश में कहीं न कहीं भाषण देते हैं, उद्घाटन करते हैं. सरकार अपनी कई उपलब्धियां गिना सकती है. विदेश नीति, आर्थिक नीति, अगले पांच-दस साल का रोड मैप, मुद्रा-स्फीति में गिरावट, सांप्रदायिक दंगों का न होना, कोयले की खानों का आबंटन. किसी भी घोटाले की भनक नहीं है. लेकिन क्या इस अवधि में आम आदमी को दैनिक जीवन-यापन में थोड़ी भी राहत मिली है? मोदी को विरासत में जो सरकारी तंत्र (ब्यूरोक्रेसी) मिला है वह आज भी पहले की तरह से काम कर रहा है. जब तक घूस, उत्कोच, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार, मिलावट, जमाखोरी, अनाप-सनाप मुनाफ़ाखोरी आदि जैसे संगीन-अपराधों के लिए सख़्त कानून नहीं बनाये जाते आम आदमी तक किसी भी योजना का मनचाहा लाभ पहुंचना एक दिवास्वप्न ही रहेगा.

लोकसभा चुनावों के परिणामों ने कॉन्ग्रेस के साथ ही कई अन्य राजनीतिक दलों को हाशिये पर ला कर खड़ा कर दिया है. सरकार में रहते जिन नीतियों का कॉन्ग्रेस समर्थन करती थी आज उन्हीं का विरोध करती नज़र आ रही है. युवराज "छुट्टी" पर हैं. संभवतः किसी संजीवनी की तलाश में जुटे हैं जो मृतप्राय कॉन्ग्रेस में नयी जान फूंक दे! वे देश में हैं या विदेश में यह भी किसी को नहीं मालूम! कब अवतरित होंगे, यह भी पता नहीं है. कहीं भी हों सांसद होने के नाते उनकी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी केंद्रीय सरकार की ही होनी चाहिए. बिना अप्रवासन जांच के कोई भी भारतीय नागरिक देश नहीं छोड़ सकता. हवाई-यात्रा का टिकट और अपना पासपोर्ट जांच के लिए हर व्यक्ति को दिखाना पड़ता है. जानकारी क्यों नहीं सार्वजनिक की जा रही है इसके पीछे अवश्य ही युवराज का कोई "राज़" होगा !

इस वर्ष के अंत में बिहार में चुनाव होने हैं. लेकिन सरगर्मियां अभी से शुरू हो गयी हैं. लालू-दंपत्ति के पंद्रह सालों के शासन ने बिहार को हर प्रकार से खोखला व जर्जरित कर दिया था. नीतिश ने भाजपा के साथ मिलकर बिहार को हताशा की स्थिति से काफ़ी कुछ उभारा. लेकिन नीतिश की व्यक्तिगत आकांक्षाओं के चलते बिहार फिर उसी दौर में पहुंच गया है. एक-दूसरे के दुश्मन, नीतिश और लालू गले मिल रहे हैं. जनता परिवार एक हो रहा है. बोतल में से मंडल का जिन्न निकालकर, जोड़-तोड़ करके नये-नये जातीय समीकरण बनाने की कोशिश की जा रही है. अपने ही पिट्ठू मांझी को दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकाल फेंका है. महादलित मांझी द्वारा लोहिया की मूर्ति पर माल्यार्पण से अपवित्र हुई मूर्ति को गंगाजल से धोया गया. यह कैसा समाजवाद है?

●

दक्षिणी-पश्चिमी एशिया के एक बड़े भू-भाग में मारकाट मची हुई है. सिया-सुन्नियों के बीच घमासान मचा हुआ है. रोज़ कत्लेआम हो रहे हैं. पेशावर, पेरिस और अब केन्या, एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों को छांट-छांट कर मौत के घाट उतार रहे हैं. यह धार्मिक उन्माद कितने मासूम लोगों की जान लेगा और कैसे रुकेगा कोई आसान उपाय नज़र नहीं आता. आज २१वीं सदी में भी किसी पैगंबर, ईसा मसीह, कबीर या गांधी के अवतरित होने की आवश्यकता है.

आमीन !!!

अरविंद

# लेटर-बॉक्स

▸▸ यह मुझ पर आपकी अहेतुकी कृपा है कि आप 'कथाबिंब' भेज दिया करते हैं और मेरी प्रतिक्रिया को भी स्वीकारते हैं.

समकालीन जीवन संदर्भ (प्रजातंत्र, उसकी योजना, मिड-डे मील, एनजीओ का बढ़ता वर्चस्व, जन-जागरण पर आधारित कहानियां, प्राणवंत और प्रासंगिक बन पड़ी हैं. 'सर्वशिक्षा' (डॉ. देवेंद्र सिंह) ने सरकारी नीति, मुफ़्त शिक्षा, मुफ़्त भोजन की न केवल खिल्ली उड़ायी है, बल्कि आंखों में उंगली डालकर यह सोचने पर मज़बूर किया है कि शोषण जड़ से लेकर फुनगी तक फैला हुआ है. ठेकेदार द्वारा मंगाये भोजन को चखकर संदीप के मुंह में एक अजीब तरह का सड़ांध जैसा स्वाद भर गया. उसको लगा, यदि वह कौर निगल गया तो पेट उसको उगल देगा. समाजवादी, कल्याणकारी प्रजातंत्र का यह रवैया कितना कारुणिक है?

वैसे मालती जोशी, प्रसिद्ध कहानीकार हैं परंतु 'अपहरण' कहानी का 'ट्रीटमेंट' ठीक से नहीं हो पाया. लड़के को लड़की की कौन सी अदा, कैसा स्वभाव, बिंब भा जायेगा, इसका पता कर पाना कठिन है. पर 'मधुरा' के घातक प्रहार से नायक इतनी जल्दी कैसे मुक्त हो जाता है ? क्या कोई हड़बड़ी नहीं लगती? डॉ. शांति सुमन की काव्य-साघना का सम्यक मूल्यांकन हो पाया है. डॉ. अशोक प्रियदर्शी का मानना उचित है कि डॉ. शांति सुमन गीत लिखती नहीं, गीत उनके हृदय से निकलकर होठों से फूट पड़ते हैं. 'मर जाणियां' (जलप्रीत कौर 'फलक') सिमोन द बआर (द सेकंड सेक्स) की याद दिला देती है. दादी की अहर्निश सेवा करें पोतियां और उन्हें आशीर्वाद मिले — 'मर जाणियां' और अजन्मे बेटे की कामना हो, पूजा प्रार्थना हो कि कभी कहा जा सके 'जुग-जुग जीओ!'

सभी रचनाएं प्राणवंत, प्रेरक और पठनीय हैं. साधुवाद.

***– प्रो. मृत्युंजय उपाध्याय***

*९/२१, वृंदावन, मनोरम नगर, लूबी सर्कुलर रोड, धनबाद-८२६००१.*

---

▸▸ मालती जोशी जी की क़लम का मैं 'पराग' के ज़माने से प्रशंसक हूं. पत्रिका के अक्तू-दिसं.'१४ के अंक में उनकी कहानी 'अपहरण' पढ़कर यही लगा कि आज भी उनकी रचना में ताज़गी है, सजगता है. इतनी सुंदर रचना के लिए मालती जी के साथ आपको भी बधाई. एक स्त्री की चोटिल भावना की वास्तविकता को कुशलता से उभारने में वे पूर्णत: सफल रही हैं. उर्मि जी की लघुकथा 'स्त्री की जीत', डॉ. दीप बिलासपुरी की ग़ज़ल, विशेष पसंद आयीं. पत्रिका के सारे स्तंभों की सामग्री सदा की तरह बढ़िया है. मैं इन रचनाओं को एक से अधिक बार पढ़ता हूं.

***– श्याम कुमार राई***

*कांथरा, पुरानी बस्ती, सलुवा-७२११४५.*

▸▸ अक्तूबर-दिसं. २०१४ अंक प्राप्त हुआ, अति प्रसन्नता हुई. प्रस्तुत अंक में संपादकीय से लेकर तमाम रचनाएं कुछ न कुछ इंगित करती हैं. आज हर तरफ़ 'खुला खेल फ़र्रुख़ाबादी' खेला जा रहा है,' ऐसे में अपनी उनींदी आंखों से कितनी दूरी तय कर पायेंगे हम! मृगतृष्णा में भटकने के अतिरिक्त हमें क्या प्राप्त हो रहा है? ऐसे में आपका ख्याल कि विदेश से अगर काला धन आया तो जायेगा कहां? वाकई एक बहुत बड़ा प्रश्न है! क्योंकि लालच और स्वार्थ का इतना बड़ा पेट है कि इसमें यह कहां खो जायेगा पता ही नहीं चलेगा. प्रस्तुत अंक में जितनी प्रेरक कहानियां हैं उतनी सटीक एवं चुटीली लघुकथाएं भी हैं. हां, थोड़ा ग़ज़ल पर ध्यान देने की आवश्यकता है. 'आमने-सामने' में विवेक द्विवेदी जी की बातें अंदर तक छूती हैं और उत्प्रेरित भी करती हैं.

***- चांद मुंगेरी***

*२सी/१-१४१, बोकारो स्टील सिटी-८२७००१.*

▸▸ 'कथाबिंब' का १२८वां अंक पढ़ा, आपने तो कमाल कर दिया 'गागर में सागर' भर दिया. 'नयी कहानियों' के सशक्त हस्ताक्षरों को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई.

ख़ुशी की बात तो यह भी है कि इसमें गीत/ग़ज़ल/कविताएं भी स्तरीय हैं. 'सागर-सीपी' के अंतर्गत डॉ.

शांति सुमन से लिया गया साक्षात्कार (श्रीमती मधु प्रसाद) दीदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को उद्घाटित करता है. मुझे शांति दीदी के गीत काफ़ी रससिक्त, सटीक और सार्थक लगते हैं. 'कथाबिंब' न केवल पठनीय बल्कि संग्रहणीय भी लगी. इसे बार-बार पढ़ने का मन होता है. 'कुछ कही, कुछ अनकही' का तो कहना ही क्या!

**- *मदन देवड़ा***

*ऑफ़ीसर्स कॉलोनी के पास, मालीखेड़ी मार्ग,*
*तराना, जि. उज्जैन-४५६६६५.*

▶▶ 'कथाबिंब' के १२८वें अंक (अक्तूबर-दिसंबर २०१४) की 'कुछ कही, कुछ अनकही' में आपने जो मुद्दे उठाये हैं वे विचारणीय हैं. कहानियां पांचों एक से बढ़कर एक हैं. श्रीमती मालती जोशी की 'अपहरण' ने एक अछूती विषय वस्तु लेकर उसे बख़ूबी निभाया है. डॉ. विवेक द्विवेदी की कहानी 'कूलर' बहुत बढ़िया है, हर लिहाज़ से. 'आमने-सामने' में उनका आत्मकथ्य भी बहुत ख़ूब है. सीधा सरल, अपनत्व का भाव लिये. हां, उनकी कहानी का यह वाक्य 'एक बूंद चुआकर ... 'कथाबिंब' जैसी पारिवारिक पत्रिका में अखरता है! डॉ. निरुपमा राय की 'कुसुममाला' दिल को कहीं गहरे तक छू जाती है. डॉ. देवेंद्र सिंह की 'सर्वशिक्षा' नारों और हक़ीकत से करने में पूरी तरह सफल है.

जसप्रीत कौर 'फ़लक' की कविता 'मर जाणियां' बहुत अच्छी लगी. लघुकथा 'नाम में क्या रखा है?' भी ख़ूब है.

**- *ओमप्रकाश बजाज***

*विजय विला, १६६, कालिंदी कुंज,*
*अग्रवाल पब्लिक स्कूल के पास, पिपलिहाना,*
*रिंग रोड, इंदौर (म. प्र.) ४५२०१८.*

▶▶ अक्तूबर-दिसंबर २०१४ का अंक मुझे काफ़ी विलंब से मिला. पत्रिका मिलने के पूर्व बधाई व प्रशंसा के कई फ़ोन आये थे और मुझे पता चल गया था कि इस अंक में मेरी लघुकथा छपी है. पत्रिका मिलने पर, 'नाम में क्या रखा है' के नीचे अपना नाम देखकर बेहद ख़ुशी हुई. परंतु मुद्रण में एक छोटी-सी त्रुटि दिखी — 'हा' के बदले 'हार' मुद्रित होने के कारण एक पूरा वाक्य अर्थहीन हो गया. सही वाक्य है — बुढ़िया के 'हां' शब्द के साथ 'हा' करके उसका मुंह खुल गया था.

डॉ. निरुपमा राय की कहानी 'कुसुममाला' बहुत अच्छी लगी. इसमें भी 'नाम' को फ़ोकस किया गया है. यह कहानी मर्म को छू गयी. डॉ. देवेंद्र सिंह की 'सर्वशिक्षा' ने शिक्षा के सच्चे परिदृश्य को चित्रित किया है. यह कहानी काफ़ी विचारणीय है. 'कमज़ोर पार्टी', 'कूलर' एवं 'अपहरण' भी अच्छी कहानियां हैं.

अंक की समस्त रचनाएं व स्थायी स्तंभ सराहनीय हैं. पत्रिका का स्तर और आपका संपादन कौशल यूं ही बना रहे, यही कामना है.

**– *चित्त रंजन गोप***

*सेंट्रल पुल कॉलोनी (बेलचढ़ी),*
*पो. व थाना-निरसा (धनबाद)-८२८२०५*

▶▶ 'कथाबिंब' मिला. अंक की कहानियों पर खिड़की खोली है हमारे प्रदेश की वरिष्ठ कथा लेखिका ने. कहानी पढ़कर अभिभूत हूं. तथाकथित आनेवाले सुख का अपहरण एक ग़रीब की कन्या कर गयी. मान आहत हुआ. मन की वह दरार नहीं भर पायी. जबकि शादी से वांछित सुख अपेक्षा से अधिक मिला. वाह ! क्या कहानी है? 'कुछ कही, कुछ अनकही' दिल्ली चुनाव के परिणामों के पहले की है. अब परिणाम आने पर क्या प्रतिक्रिया हुई यह अगले अंक में पढ़ने को मिले शायद! कालेधन के मुद्दे पर भी अच्छा विमर्श है. इस बार पद्यांश से पूर्ण संतोष नहीं हुआ. नवगीत की जानी मानी कवयित्री डॉ. शांति सुमन का साक्षात्कार भी उल्लेख्य है.

**– *चंद्रसेन विराट***

*१२१, वैकुंठधाम कॉलोनी,*
*आजाद बाजार के पीछे, इंदौर-४५२०१८*

▶▶ 'कथाबिंब' के १२८वें अंक पर बधाई. आपने संपादकीय में टी. वी. को 'झूठ का डब्बा' की सटीक उपमा दी है. दुर्भाग्य यह है कि इसी को देखकर पिछली और आज की पीढ़ी सीख/बड़ी हो रही है. देश जिस मॉडर्न व्यवस्था की ओर ले जाया जा रहा है उससे न पेरेंटिंग बची है न टीचिंग.

टीचिंग के सिलसिले में डॉ. देवेंद्र सिंह जी की